

State- Madhya Pradesh

Crop- Wheat

खेत की तैयारी

- ग्रीष्मकालीन जुताई
- तीन वर्षों में एक बार गहरी जुताई
- काली भारी मिट्टी को भुरभुरा (Fine Tilth) बनाना कठिन
- रोटावेटर का प्रयोग उपयुक्त डिस्क हैरो का भी प्रयोग उपयुक्त बुवाई का उचित समय
- असिंचित: मध्य अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक
- अर्धसिंचित: नवम्बर माह का प्रथम पखवाड़ा
- सिंचित (समय से): नवम्बर माह का द्वितीय पखवाड़ा
- सिंचित (देरी से): दिसंबर माह का द्वितीय सप्ताह

अनुशंसित किस्म

- (1) मालवा अंचल: रतलाम, मन्दसौर, इन्दौर, उज्जैन, शाजापुर, राजगढ़, सीहोर, धार, देवास तथा गुना का दक्षिणी भाग- जे.डब्ल्यू. 17, जे.डब्ल्यू. 3269, जे.डब्ल्यू. 3288, एच.आई. 1500, एच.आई. 1531, एच.डी. 4672 (कठिया), जे.डब्ल्यू. 1201, जे.डब्ल्यू. 322, जे.डब्ल्यू. 273, एच.आई. 1544, एच.आई. 8498 (कठिया), एम.पी.ओ. 1215
- (2) निमाड अंचल: खण्डवा, खरगोन, धार एवं झाबुआ का भाग- जे.डब्ल्यू. 3020, जे.डब्ल्यू. 3173, एच.आई. 1500, जे.डब्ल्यू. 3269, जे.डब्ल्यू. 1142, जे.डब्ल्यू. 1201, जी.डब्ल्यू. 366, एच.आई. 1418
- (3) विन्ध्य पठार: रायसेन, विदिशा, सागर, गुना का भाग- जे.डब्ल्यू. 17, जे.डब्ल्यू. 3173, जे.डब्ल्यू. 3211, जे.डब्ल्यू. 3288, एच.आई. 1531, एच.आई. 8627 (कठिया), जे.डब्ल्यू. 1142, जे.डब्ल्यू. 1201, एच.आई. 1544, जी.डब्ल्यू. 273, जे.डब्ल्यू. 1106 (कठिया), एच.आई. 8498 (कठिया), एम.पी.ओ. 1215 (कठिया)
- (4) नर्मदा घाटी: जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा- जे.डब्ल्यू. 17, जे.डब्ल्यू. 3288, एच.आई. 1531, जे.डब्ल्यू. 3211, एच.डी. 4672 (कठिया) जे.डब्ल्यू. 1142, जी.डब्ल्यू. 322, जे.डब्ल्यू. 1201, एच.आई. 1544, जे.डब्ल्यू. 1106, एच.आई. 8498, जे.डब्ल्यू. 1215
- (5) बैनगंगा घाटी: बालाघाट एवं सिवनी-जे.डब्ल्यू. 3269, जे.डब्ल्यू. 3211, जे.डब्ल्यू. 3288, एच.आई. 1544, जे.डब्ल्यू. 1201, जी.डब्ल्यू. 366, एच.आई. 1544, राज 3067
- (6) हवेली क्षेत्र: रीवा, जबलपुर का भाग, नरसिंहपुर का भाग-जे.डब्ल्यू. 3020, जे.डब्ल्यू. 3173, जे.डब्ल्यू. 3269, जे.डब्ल्यू. 17, एच.आई. 1500, जे.डब्ल्यू. 1142, जे.डब्ल्यू. 1201, जे.डब्ल्यू. 1106, जी.डब्ल्यू. 322, एच.आई. 1544,

- (7) सतपुड़ा पठार: छिंदवाड़ा एवं बैतूल- जे.डब्ल्यू. 17, जे.डब्ल्यू. 3173, जे.डब्ल्यू. 3211, डब्ल्यू. 3288, एच.आई. 1531, एच.आई. 1418, जे.डब्ल्यू. 1201, जे.डब्ल्यू. 1215, जी.डब्ल्यू. 366,
- (8) गिर्द क्षेत्र: ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना एवं दतिया का भाग- जे.डब्ल्यू. 3288, जे.डब्ल्यू. 3211, जे.डब्ल्यू. 17, एच.आई. 1531, जे.डब्ल्यू. 3269, एच.डी. 4672 एच.आई. 1544, जी.डब्ल्यू. 273, जी.डब्ल्यू. 322, जे.डब्ल्यू. 1201, जे.डब्ल्यू. 1106, जे.डब्ल्यू. 1215, एच.आई. 8498
- (9) बुन्देलखण्ड क्षेत्र: दतिया, शिवपुरी, गुना का भाग टीकमगढ़, छतरपुर एवं पन्ना का भाग- जे.डब्ल्यू. 3288, जे.डब्ल्यू. 3211, जे.डब्ल्यू. 17, एच.आई. 1500, एच.आई. 1531, जे.डब्ल्यू. 1201, जी.डब्ल्यू. 366, राज 3067, एम.पी.ओ. 1215, एच.आई. 8498

बीज की मात्रा-

औसत रूप में 100 कि.ग्रा./हे. (हजार दाने का वजन 40 ग्राम तक है)

बीजोपचार-

कार्बाक्सिन 75%, wp/कार्बेन्डाजिम 50% wp 2.5-3.0 ग्राम दवा/किलो बीज

टेबूकोनोजाल 1 ग्राम/किलो

पोषक तत्वों का प्रयोग

	नत्रजन कि.ग्रा./हे	फास्फोरस कि.ग्रा./हे	पोटाष कि.ग्रा./हे
असिंचित	40	20	0
अर्धसिंचित	60	30	15
सिंचित	120	60	30
देरी से	80	40	20

सिंचाई

3 - 4 सिंचाई पर्याप्त (55 - 60 क्विंटल उपज)

एक सिंचाई: 40 - 45 दिनों बाद

दो सिंचाई: किरीट अवस्था, फूल निकलने के बाद

तीन सिंचाई: किरीट अवस्था, पूरे कल्ले निकलने पर, दाना बनने के समय

चार सिंचाई: किरीट अवस्था, पूरे कल्ले निकलने पर, फूल आने पर, दूधिया अवस्था

खरपतवार नियंत्रण

रासायनिक विधि:-

नींदानाशक	खरपतवार	दर/हे.	प्रयोग का समय
पेण्डीमिथेलीन	संकरी एवं चौड़ी	1.0 किग्रा.	बुवाई के तुरन्त बाद
मेट्रीब्यूजिन	संकरी एवं चौड़ी	250 ग्रा.	बुवाई के 35 दिन तक
2, 4 - डी	चौड़ी पत्तिया	0.4 - 0.5 किग्रा.	बुवाई के 35 दिन तक
आइसोप्रोपयूरान	संकर पत्तिया	750 ग्रा.	बुवाई के 20 दिन तक
आइसोप्रोपयूरान +2, 4 - डी	चौड़ी पत्तिया एवं संकरी पत्तिया	750 ग्रा +750 ग्रा.	बुवाई के 35 दिन तक